ISSN 2229 4732

शब्द सरोकार

अंक 58, वर्ष 16 जनवरी - मार्च 2019

सम्पादक डॉ. हुकुमचन्द राजपाल

UGC Approved
at Sr. 3739
Arts & Humanities
Group

शब्द सरोकार

(मालवा साहित्य कला मंच की साहित्यिक हिंदी पत्रिका)

अंक 58, वर्ष 16 जनवरी - मार्च 2019

संस्थापक :
स्व॰ डॉ॰ प्रेमप्रकाश सिंह

संरक्षक :
स्व॰ श्रीमती डॉ॰ प्रेमप्रकाश सिंह
श्री जयप्रकाश सिंह धालीवाल

परामर्श :
डॉ॰ मनमोहन सहगल
प्रो॰ कुलवंत सिंह ग्रेवाल
डॉ॰ हरजिन्दर वालिया
डॉ. इन्द्रमोहन सिंह

सम्पादक :
डॉ॰ हुकुमचन्द राजपाल

संयुक्त सम्पादक :
डॉ॰ सुरेश नायक, डॉ॰ नविला, डॉ॰ रविदत्त 'कौशिश'

उपसम्पादक :
डॉ॰ कृष्ण भावुक
डॉ॰ मीनाक्षी काला
डॉ॰ सत नारायण
डॉ॰ वीरेन्द्र वालिया
डॉ॰ हरविन्दर कौर

प्रबन्ध सम्पादक :
श्री संजय राजपाल

आवरण-पृष्ठ :
प्रिं॰ वीरेन्द्र सिंह घुम्मण, श्री संजय राजपाल

सम्पर्क : गंगा सदन, 451, अर्बन एस्टेट, फेज - 1,
पटियाला - 147 002, (पंजाब)
फोन : 0–99157-83050.
email : sanjyotima@gmail.com
website: www.betweenlines.co

ISSN 2229 4732 SHABAD SAROKAR

अनुक्रम

सम्पादकीय : 3-4

आलेख : प्रेमप्रकाश सिंह 5, अमिता रेढू 7, पंकज माला 9, सपना बंसल 15, आशा 19, तारा देवी 24, सुखदेव सिंह मिन्हास 35, अंजु बाला 38, लीमचन्द 40, रीना डोगरा 47

लघु कथाएँ : रामनिवास 'मानव' 61

कविता : राजेन्द्र कुमार 14, मृत्युंजय 23, सूर्य प्रकाश मिश्र 46, अरुण कुमार शर्मा 49, चन्द्रकान्त दीक्षित 49, इन्द्रमोहन सिंह 50, दिव्य सृष्टि 'दिव्या' 53, रामसनेही लाल शर्मा 54, सुरेश सेठ 55, महेन्द्र जैन 55, राजीव कुमार त्रिगर्ती 58, जगदीप शर्मा 59, मानवता घुम्मन 60, सुरेश नायक 62, जसप्रीत कौर 'फ़लक' 62, मुक्ता अरोड़ा 64, जयसिंह अलवरी 67, ऋषि धालीवाल 69, जसबीर चावला 70

पुस्तक समीक्षाएँ : मनमोहन सहगल 56, ईश्वरदास जौहर 57, निवेदिता अरोड़ा 63, सुरेश नायक 65, कुल भूषण कालड़ा 68

श्रधा-सुमन : 61

लेखकीय पते : 71-72

इस अंक का मूल्य : 80 रुपये (साधारण डाक-व्यय सहित) **: 100 रुपये** (कूरियर/पंजीकृत डाक सहित)
वार्षिक : 250 रुपये साधारण डाक द्वारा **(कूरियर/पंजीकृत डाक द्वारा : 350 रुपये), आजीवन : 1100 रुपये** साधारण डाक द्वारा **(कूरियर/पंजीकृत डाक द्वारा : 1500 रुपये), विशिष्ट सदस्यता : 1500 रुपये**
प्राप्ति–स्थान **: गंगा सदन, 451, अर्बन एस्टेट, फेज – 1, पटियाला (पंजाब) – 147 002.**

1. सभी पदाधिकारी अवैतनिक हैं।
2. लेखकों के विचारों से सम्पादक-मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है, ये उनके निजी विचार हैं।
3. सभीं न्यायिक मामले पटियाला में ही होंगे।
4. पत्रिका में प्रकाशनार्थ रचनाएँ टंकित/सुलिखित हों, लौटाने की व्यवस्था नहीं है। फोटो-प्रति नहीं भेजिएगा।
5. नवप्रकाशित पुस्तकों की समीक्षा के लिए दो प्रतियाँ भेजनी अनिवार्य हैं।
6. यह पत्रिका आपकी अपनी है, आपका रचनात्मक एवं आर्थिक सहयोग प्रार्थित है।
7. विज्ञापन, सदस्यता-शुल्क और विशिष्ट सदस्यता-शुल्क से ही पत्रिका अधिक स्थायी/कारगर भूमिका निभा पाएगी। सहयोग प्रार्थित है।
8. स्थापित एवं नवोदित रचनाकारों को एक साथ मंच पर लाना हमारा लक्ष्य है।

* * * * *

पत्रिका का समस्त श्रेय हम स्व॰ (डॉ॰) प्रेमप्रकाश सिंह जी की धर्मपत्नी का स्वीकारते हैं।

पत्रिका के सदस्यता शुल्क के लिए अपनी राशि बैंक ड्रॉफ़्ट द्वारा **सम्पादक, 'शब्द-सरोकार'**, पटियाला (Editor, SHABAD SAROKAR, PATIALA) के नाम से भेजिएगा। सदस्य बनने के लिए आप नकद राशि **स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया**, पंजाबी विश्वविद्यालय शाखा, पटियाला में जमा कराकर (Branch 50009, IFSC Code SBIN0050009, Account No. 65009592131) रसीद की प्रतिलिपि भेजनी अनिवार्य है। पत्रिका के स्वयं सदस्य बनिये तथा मित्रों को भी बनाइए।

* * * * *

सभी रचनाधर्मियों से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशनार्थ प्रेक्षित सभी रचनाओं को **ईमेल** से भेजें। इसके लिए आप **यूनिकोड** फॉण्ट का प्रयोग कर सकते हैं ।

* * * * *

केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त

* * * * *

पत्रिका-प्राप्ति स्थान : Between Lines, 14, Shalimar Plaza, Opp. Punjabi University Patiala.

* * * * *

विज्ञापन सहयोग के लिए हम श्री बी.एस राणा, चीफ मैनेजर, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, पंजाबी विश्वविद्यालय शाखा, पटियाला को धन्यवाद देते हैं।

* * * * *

रचनात्मक सहयोग के लिए हम इस अंक के सभी रचनाधर्मियों को धन्यवाद देते हैं। हम पत्रिका का समस्त श्रेय इसके संयुक्त-सम्पादक **डॉ॰ सुरेश नायक** को देते हैं।

* * * * *

मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक, **डॉ॰ हुकुमचन्द राजपाल**
द्वारा स्वामित्वधारी 'मालवा साहित्य कला-मंच' (पंजीकृत) ने
'सौरभ प्रकाशन', जालन्धर शहर से छपवाकर
गंगा सदन, 451, अर्बन एस्टेट, फेज़-1, पटियाला से प्रकाशित किया।
पंजीकरण संख्या : पी॰ यू॰ एन॰ एच॰ आई॰ एन॰/2003/13345
website: www.betweenlines.co **email** : sanjyotima@gmail.com
ISSN 2229 4732 SHABAD SAROKAR
(UGC Approved at Sr. 3739 Arts & Humanities Group)

कुमार कृष्ण की ग़ज़लों में समाज की विसंगतियों का चित्रण

- अंजु बाला

कुमार कृष्ण जी 1951 में हिमाचल प्रदेश में जन्मे। वे एक स्वतंत्र लेखक, कवि तथा आलोचक के रूप में प्रसिद्ध हैं। 1985 में प्रकाशित उनकी रचना 'काठ पर चढ़ा लोहा' जिसमें इन्होंने प्रजातंत्र में आम आदमी की पीड़ा को ग़ज़लों के माध्यम से व्यक्त किया है।

आज देश में प्रजातंत्र होने के बावजूद भी समाज का एक वर्ग तो संघर्ष करता है पेट भरने के लिए तो दूसरा वर्ग संघर्ष करता है पेटी भरने के लिए। अमीर और गरीब के बीच की यह खाई कम नही हो रही बल्कि बढ़ ही रही है। जो उच्च वर्ग है वह आम आदमी पर अत्याचार करता जाता है और आम आदमी इन अत्याचारों को हमेशा से सहता आया है। ग़ज़लकार कुमार कृष्ण ने आज के समय की इन विसंगतियों का एक्स-रे फोटो के रूप में प्रस्तुत करने का अदम्य साहस किया है। इन्होनें जन - कल्याण के लिए वक्त की नब्ज़ को पाठको के समक्ष प्रस्तुत किया है ताकि इस स्थिति से निपटा जा सके।

आम आदमी के दिन - रात मेहनत करने के बाद भी परिवार के भरण - पोषण में असमर्थ पाने की पीड़ा प्रस्तुत करती यह गजलः-

हमने बैलों की तरह कर के मशक्कत देख ली
दिन-ब-दिन बढ़ता गया जब रोटियों का सिलसिला
इश्तहारों ने कही यों देश की खुशहालियां
एक ढिबरी के लिए भी तेल मुझको न मिला
कुर्सियों ने आदमी की शक्ल ही बिगाड़ दी
छत दरख्तों की बनाकर लोग रहते है जहां
रफ्ता -रफ्ता ये जमीं बदरंग होती जा रही
एक झूठी तसल्ली में ही जीते हम यहां

'पन्त' की 'भारतमाता' कविता की तरह कुमार जी की चिन्ता भी उन लोगों के बारे में है जो आज भी पेड़ों के नीचे रहने को मजबूर हैं। अनेक आवास योजनाएं, कागजों में बनाई गई हैं, कितनी पूरी हुई, कितने लोग इस सुविधा को प्राप्त कर सके, क्या यह सुविधा पात्र व्यक्तियों को मिल पाई, शायद नहीं।

हजारों आदमियों में एक भी चेहरा आदमी का न मिल पाना समाज में मौजूद विसंगतियों की ओर इशारा करता है। आदमी, आदमी किन चीजों की मौजूदगी से बनता हैं वे शायद इस समाज में खो चुकी हैं या खोने के कगार पर हैं। आम आदमी की हालत बंद कमरे सी नज़र आती है। उत्पीड़क वर्ग इतना चालाक है कि वे रात के अंधेरे में लोगों पर जुल्म ढहाते हैं ताकि उनके असली चेहरे पहचान में न आ सकें। ये शक्तिशाली हैं, उनकी पहुंच हैं। उन्हें मालूम है कि जिन पर वे जुल्म ढहा रहे हैं वे इनके विरूद्ध कुछ भी करने की ताकत नही रखते। इन्हें इनकी स्थिति पता हैं तभी तो वे घिनौने कार्य करते हैं। ये लोग बनते तो बड़े ही परोपकारी हैं परंतु असल में दिखावा करते हैं। गरीबी क्या होती है इसकी तस्वीर ग़ज़लकार ने प्रस्तुत की हैं। ज़िंदगी का मज़ा केवल साधन सम्पन्न शक्तिशाली लोग ही उठा सकते हैं। शोषित लोग, उत्पीड़ित, अभावग्रस्त लोग हमेशा खौफ भरी ज़िंदगी जीते हैं। आम जनता का सारा जीवन रोटी के संघर्ष में ही गुज़रता है। वह अपने अधिकारों से अनभिज्ञ है। देश के संविधान और न्यायतंत्र से अनभिज्ञ है इसलिए उनका शोषण और भी बढ़ जाता है। खौफभरी ज़िंदगी जीते ये अभावग्रस्त लोग शायद पूरी तरह टूट चुके हैं। तभी तो ग़ज़लकार यह कहता नज़र आता हैं:-

मैंने दस्ताने उतारे, देखने को असलीयत
फिर भी उस दीवार का पत्थर ठण्डा ही मिला
पट्ठओं के बीच उस ने अनगिनत सपने बुने
हर किसी मौसम में जिस्म ठण्डा ही मिला।

देश की हालत देखते हुए भी लोगो में जागरूकता की कमी है। लोग जागरूक नहीं हैं। व्यवस्था अपने विरूद्ध काम करने वालों को कैसे कुचलती है, गांव के लोगों के साथ पुलिस का किस तरह व्यवहार होता है। हाशिये पर फेंक दिए गए इन्सान के दिल के दर्द को देखकर ग़ज़लकार

उसकी दिल की बात सबके सामने लाता है। ताउम्र गरीबी की मार झेल रहे इन्सान की व्यथा का चित्रण करता ग़ज़लकार कहता है:-

चाबियों के बोझ से जेबें हमारी फट गई
एक ताला भी हमारे हाथ से न खुल सका
कत्ल पे फिर कत्ल करवाये भयानक भूख ने
उसके घर का एक भी पत्थर न मुझ से हिल सका

हर इन्सान की जीवन में ख़्वाहिश होती है कि उसका भी अपना एक घर हो, परंतु आज के समय में आम आदमी की ख्वाहिश पूरी होती नहीं दिखाई देती तभी तो वह ताउम्र दूसरों के दरवाज़ों की चाबियां जेबों में संभालता रहता है। कभी भी अपना दरवाज़ा न हो सका, जिसकी चाबियां वह अपने जेब में रख सके। घर की बात तो दूर, भूख से मरने को मजबूर करवाने वाले लोगों के खिलाफ भी वह कुछ नही कर पाया।

ग़ज़लकार ने बिना किसी डर के स्पष्ट और सही भाषा का प्रयोग करते हुए जन जीवन की विषमताओं का चित्रांकन किया हैं पूंजीवादी अर्थतंत्र में गरीब का जीवन कितनी परेशानियों और कठिनाइयों से भरा होता है इसे यहाँ हम ग़ज़लकार की ग़ज़लों के माध्यम से देख सकते हैं। शोषण तंत्र की जड़ें कितनी गहरी हैं, शोषितों के प्रति ग़ज़लकार के मन में सहानुभूति और करूणा का भाव है। वे उन्हें सारी स्थिति से रू-ब-रू करवा कर सचेत करने का प्रयास करते है:-

जिस्म लफ्ज़ों के रहे सिलते यहाँ ये उम्र भर।
एक मुकम्मल सा चेहरा आज तक न बन सका।
वे उगाते तो रहे गमलों में गन्ने की फसल
शहर फिर भी एक मीठा गांव तो न बन सका।
हल चलाते ही मरा दादा तुम्हारे खेत में।
नंगी सूरत ढांपने को कफन भी न बन सका।
खूबसूरत योजनाएँ सर छुपाने की बनी
घर तो घर वहाँ आज एक तम्बू न कोई तन सका।

व्यवस्था की हालत यह है कि जब भी कहीं कोई हादसा होता है तो जनता के प्रतिनिधि उन तक उनके दर्द को सहलाने अपना फर्ज़ निभाने मात्र हवाईयात्रा से खिड़की से झांककर अपना कर्तव्य निभाते हैं। कहीं वे हादसे का शिकार न हो जाएं, इसके डर से अपने को सुरक्षित रखते हैं। हादसे के शिकार लोगों को जो सहानुभूति वहां पर इन प्रतिनिधियों के पहुँचने से मिलनी थी, उसका उनके अंदर कुछ और ही एहसास होता है। इनके अंदर आदर की भावना अपने आप जाग जाती है। परंतु ये लोग तो इसके पात्र ही नही दिखाई देते, तभी जो हादसे के पीड़ित लोग संगठित होकर अपनी आवाज इन तक पहुँचाने में सक्षम होते हैं, उन्हें तो थोड़ी राहत मिल जाती है बाकी बिना राहत के ही जीने को मजबूर होते हैं उनकी ज़िंदगी तबाह हो जाती है। ये वर्ग जानता है कि कहाँ राहत राशि दी जानी चाहिए, नहीं देने पर कुछ कार्यवाही हो सकती है। जो घर पूरी तरह तबाह हो जाते हैं। ऐसे अनेक घरों की सूचियाँ इनके द्वारा मिलीभगत के कारण जानबूझकर गायब की जाती हैं। इनके ऐसा करने पर इन्हें विश्वास है कि इनका कुछ नही हो सकता क्योंकि इन उत्पीड़कों की आवाज़ पहुँचाने वाला कोई नही है। ये लावारिस, आश्रयहीन, भूखे नंगे जीवनयापन को मजबूर होते हैं। भूख से व्याकुल ये लोग कोई भी कदम उठाने से परहेज नही करते, चाहे वह अनैतिक ही क्यों न हो। पेट की आग ही ऐसी है, इसके आगे इन्सान को कुछ नज़र नही आता। भूख के आगे अपनी औलाद तक बेचने में वे किसी तरह की शर्म महसूस नही करते। रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी मूलभूत ज़रूरतों से आज भी देश महरूम है। भूख में औलाद बेच देना इसका स्पष्ट प्रमाण है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि इनकी ग़ज़लों में सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक विसंगतियों की बड़ी प्राणवंत अभिव्यक्ति देखने को मिलती है।

संदर्भ सूची:-

1. कुमार, कृष्ण - काठ पर चढ़ा लोहा, पृ. सं. - 23
2. वही पृ. सं. - 66
3. वही पृ. सं. - 21
4. वही पृ. सं. - 31
5. वही पृ. सं. - 42
6. वही पृ. सं. - 13
7. वही पृ. सं. - 17
8. वही पृ. सं. - 23
9. कुमार, कृष्ण - काठ पर चढ़ा लोहा, पृ. सं. - 35

****

लेखकीय पते

डॉ. अमिता रेढ़ू	:	सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, गुरु नानक गर्ल्स कॉलेज, सन्तपुरा, यमुनानगर।
डॉ. सपना बंसल	:	सहायक प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला-171 005
डॉ. पंकज माला	:	1244, साहिबज़ादा कालोनी, पठानकोट 145001 (पंजाब)
आशा	:	हिन्दी विभाग, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला-171 005
डॉ. तारा देवी	:	ग्राम दादौर, पी.ओ. धभान, तहसील बल्ह, जिला मंडी, (हि.प्र.)
डॉ. सुखदेव सिंह मिन्हास	:	अध्यक्ष हिंदी विभाग, स्नातकोत्तर राजकीय महाविद्यालय, सेक्टर-11,चंडीगढ़।
डॉ. राजेन्द्र कुमार सेन	:	सम्प्रति, सहायक प्रोफेसर एवं स्थानापन्न विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा
डॉ. अंजु बाला	:	असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, गुरू नानक गर्ल्ज कॉलेज, यमुनानगर, हरियाणा
डॉ. लीमचन्द	:	सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, स्नातकोत्तर राजकीय महाविद्यालय, सेक्टर 46,चण्डीगढ़
डॉ. रीना डोगरा	:	सहायक आचार्या, धनीराम ठाकुर निवास, नजदीक शिव मंदिर, साँगटी-3,समरहिल, शिमला-171005
मृत्युंजय	:	वृन्दावन, राजेन्द्र पथ, धनबाद 826001 झारखंड
दिव्य सृष्टि 'दिव्या'	:	1/300 सुहाग नगर फिरोजाबाद
मुक्ता अरोड़ा	:	33, गोविन्द नगर, अम्बाला छावनी
सूर्य प्रकाश मिश्र	:	बी-23/42 ऐ.के., बसन्त कटरा गाँधी चौक, खोजवां (दुर्गाकुण्ड) वाराणसी-221001
अरुण कुमार शर्मा	:	से.नि. (हि.प्र.से), ग्रा. अप्पर घनेड़ी, डा. शोघी, तह. जिला शिमला (हि.प्र.)